क्या कोयले की बाल्टी उड़ सकती है?

चित्रः टॉम मिलर
शब्दः कैमी कैलोवे मर्फी
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हरेक बच्चे में पैदा होते समय अनेक रचनात्मक संभावनाएं होती हैं! स्नेहिल परिवार और मित्रों के प्रोत्साहन से ये प्रतिभाएं फूलती-फलती हैं। हर बालक अपने जीवन में इन संभावनाओं को महसूस करता है। यह एक ऐसे लड़के की सत्य कथा है, जिसमें वस्तुओं, लोगों, और स्थानों में जीवन और कहानियाँ देख पाने की प्रतिभा थी। उसे अपनी दुनिया अच्छी लगती थी और वह अपने इर्द-गिर्द कला को पाता था - फिर चाहे वह कोयले की बाल्टी जैसी असंभव चीज़ें ही क्यों न हो। कौन जानता है, हो सकता है कि कोयले की बाल्टी भी किसी परिन्दे की तरह उड़ पाती हो!

यह कहानी संभावनाओं के बारे में है।

क्या कोयले की बाल्टी उड़ सकती है?

चित्रः टॉम मिलर

शब्दः कैमी कैलोवे मर्फी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्या कोयले की बाल्टी उड़ सकती है?
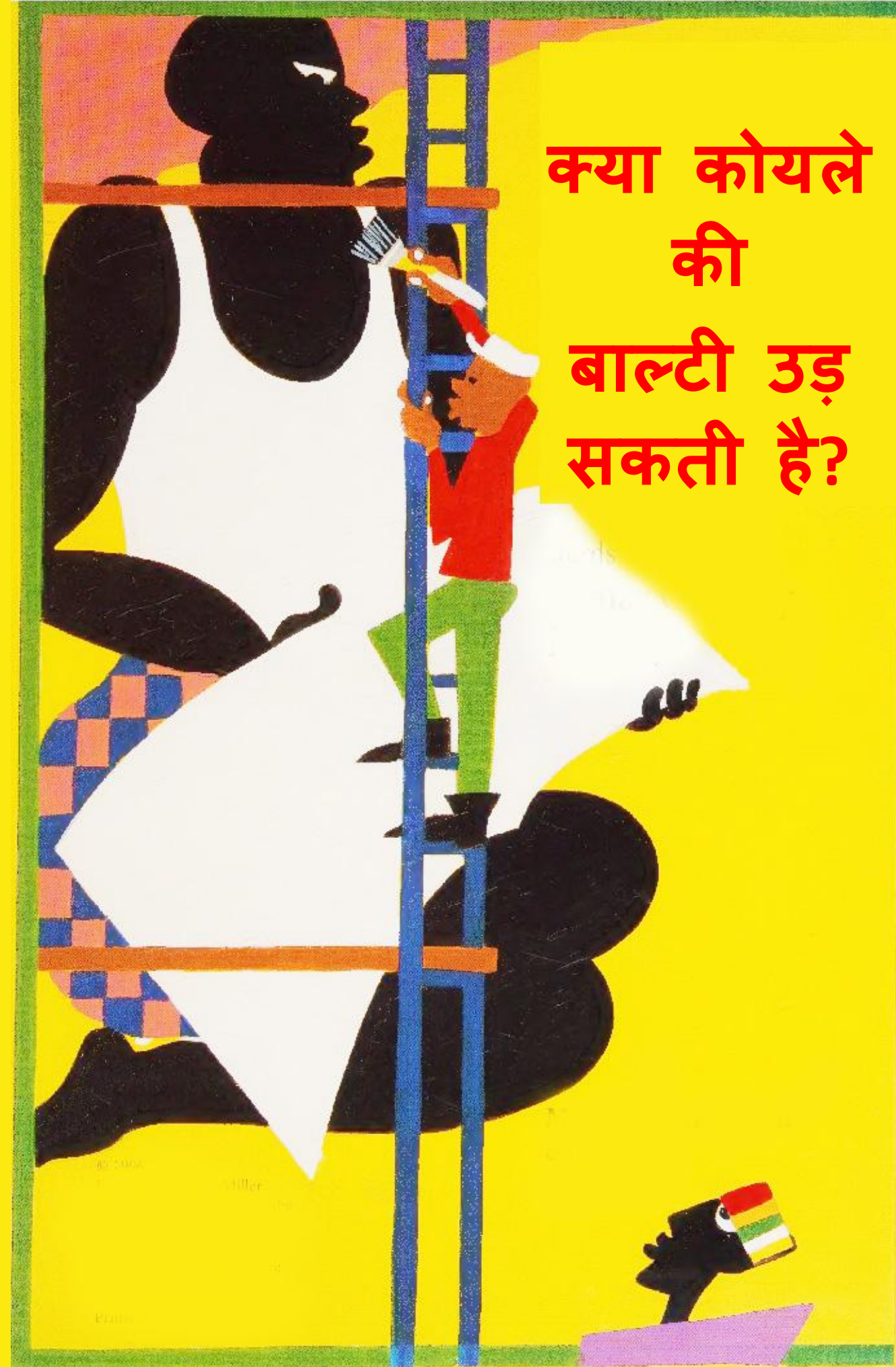
मेरा नाम टॉम मिलर है। मैं मेरीलैण्ड के बॉल्टीमोर शहर में पैदा हुआ था। मेरी माँ कहती है कि मुझे शुरू से ही चटक रंग पसन्द थे। वह मुझे अस्पताल से एक चटक लाल कम्बल में लपेट कर घर लाई थी। जब मैंने कम्बल से झाँक कर रंग-बिरंगी ईंटों से बने घर और सफेद संगमरमर से बनी सीढ़ियाँ देखीं, तो मैं खुशी से किलक अपने छोटे-छोटे पैर पटकने लगा और मेरी बंधी मुट्ठियाँ हवा में मुक्केबाज़ी करने लगीं। मैं घर के बाहर वाले गमले में उगे गुलाबी और नीले फूलों को देख मुस्कुराया।
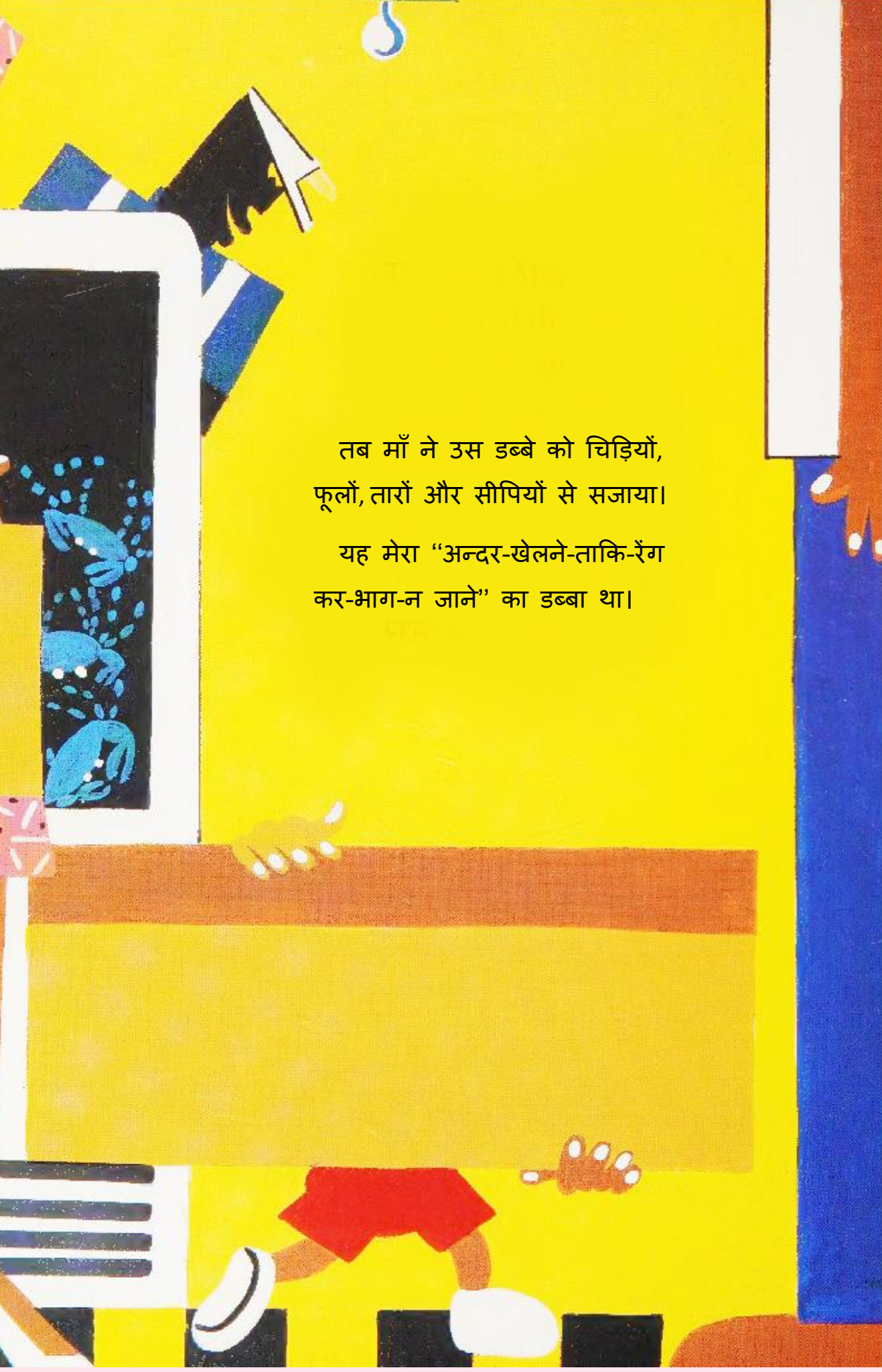
"इसका नाम टॉम है," मेरी माँ ने सबको बताया। "अरे कितना सुन्दर है नन्हा," पड़ोसियों और दोस्तों ने कहा। वे मेरे चारों ओर लाड़-दुलार करते घूमे।

"माँ कहती है कि सुन्दर वही है जो सुन्दर काम करे, पर यह तो बस रोता ही रहता है," मेरे भाई ने भौं चढ़ा कर कहा।

जल्द ही मैंने अपने घुटनों पर रेंगना शुरू कर दिया। सो मेरी माँ लाफायत बाज़ार गई और वहाँ से खोज-खाज कर मेरे लिए एक बड़ा-सा गत्ते का ड़ब्बा ख़रीद लाई। मेरे भाई ने उसे अपने सिर पर रखा और लोगों से भिड़ता-टकराता उसे घर ले आया।
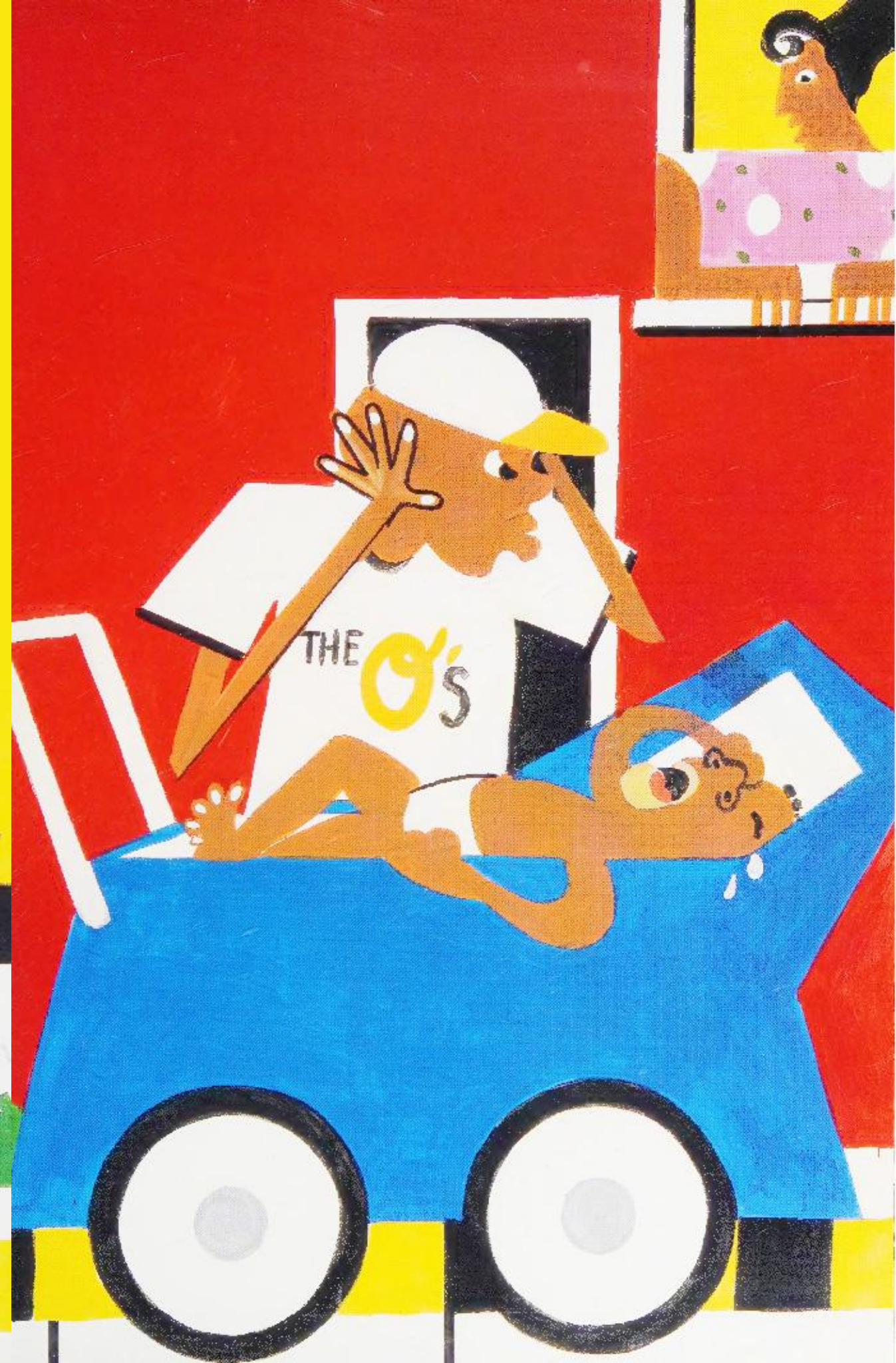
तब माँ ने उस डब्बे को चिड़ियों, फूलों, तारों और सीपियों से सजाया।

यह मेरा "अन्दर-खेलने-ताकि-रंग कर-भाग-न जाने" का डब्बा था।
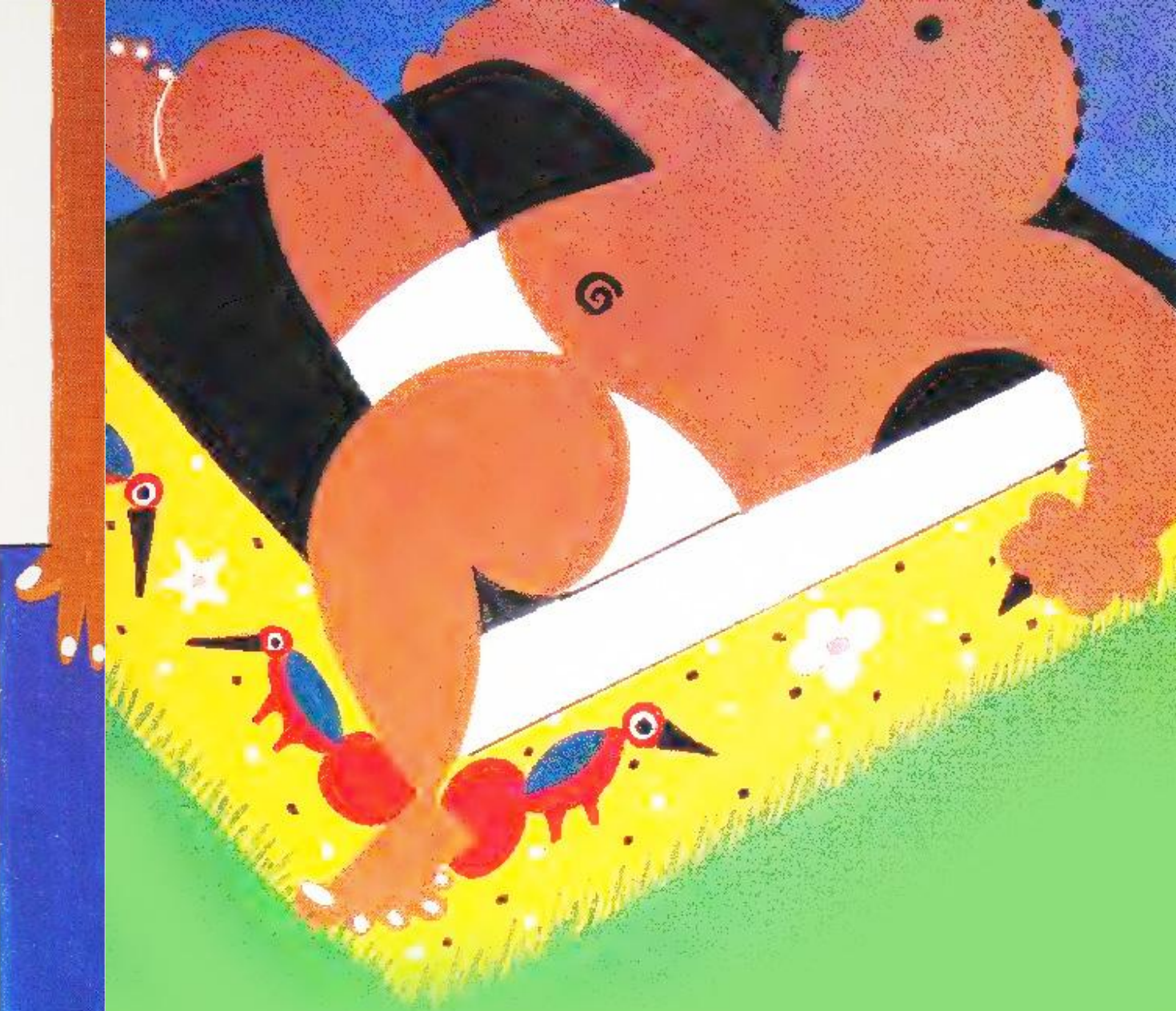
गर्मियों में मैंने माँ को घर के पिछवाड़े वाले आँगन को रंगते देखा। उसने मेज़ों को नारंगी, और बैंचों को लाल रंगा। तब ईंटों से बने पैदल पथ को गुलाबी और बाड़ को चटक हरा रंग दिया। बगल की कुर्सियों को बैंगनी और पीले रंग में रंगा। उसने कपड़े सुखाने की तार तक को काला रंगा ताकि वह दिखाई ही न दे।

सभी पड़ोसियों और रिश्तेदारों को पिछवाड़े के आंगन के चटक रंग पसन्द आए। वे गुलाबीपन लिए लाल रंग के सख़्त खोल वाले केंकड़ों, चटक लाल तरबूज़ों और मलाईदार सफेद आलू के सलाद से भरे बड़े-बड़े कटोरों के गिर्द हंसे और नाचे।

मेरे भाई ने केंकड़े का पंजा लिया और मुझे आंगन भर में दौड़ाया। तब मेरे चचेरे भाई ने मुझे सिखाया कि मैं एक साबुत ज़िन्दा केंकड़ा ले भाई को कैसे दौड़ा सकता हूँ।

जब मैं कुछ और बड़ा हुआ और शिशुशाला जाने लायक हो गया, तब मुझे शाला जाने से बहुत डर लगा। मेरे पिता ने कहा, "डरो मत। मैं तुम्हारे पहनने के लिए एक बढ़िया हरे रंग का सूट बना दूंगा।"

मेरे पिता एक अच्छे दर्ज़ी थे। वे किसीका भी सूट ऐसे सिलते कि वह उनको बिलकुल ठीक आए। उन्होंने शिशुशाला में पहनने के लिए मेरा सूट भी सिला। पर लगता है वे किसी ग्राहक के साथ व्यस्त रहे होंगे, और कुछ जल्दी में।

मुझे लगा कि मेरा सफेद और हरा धारियों वाला सूट बेहद बढ़िया है। पर मेरा भाई मुझे उसमें देख हंसते-हंसते फर्श पर लोट-पोट हो गया, क्योंकि उसकी एक टांग दूसरे से छोटी थी और उसकी बाज़ुएं मेरे लिए बहुत ही लम्बी थीं। पर शिशुशाला कि शिक्षिका ने कहा, "तुम एक छोटे से भद्र पुरुष लग रहे हो।" यह सुन मैंने अपने पैर पटके और मुट्ठियाँ हवा में उछाल नाच उठा।
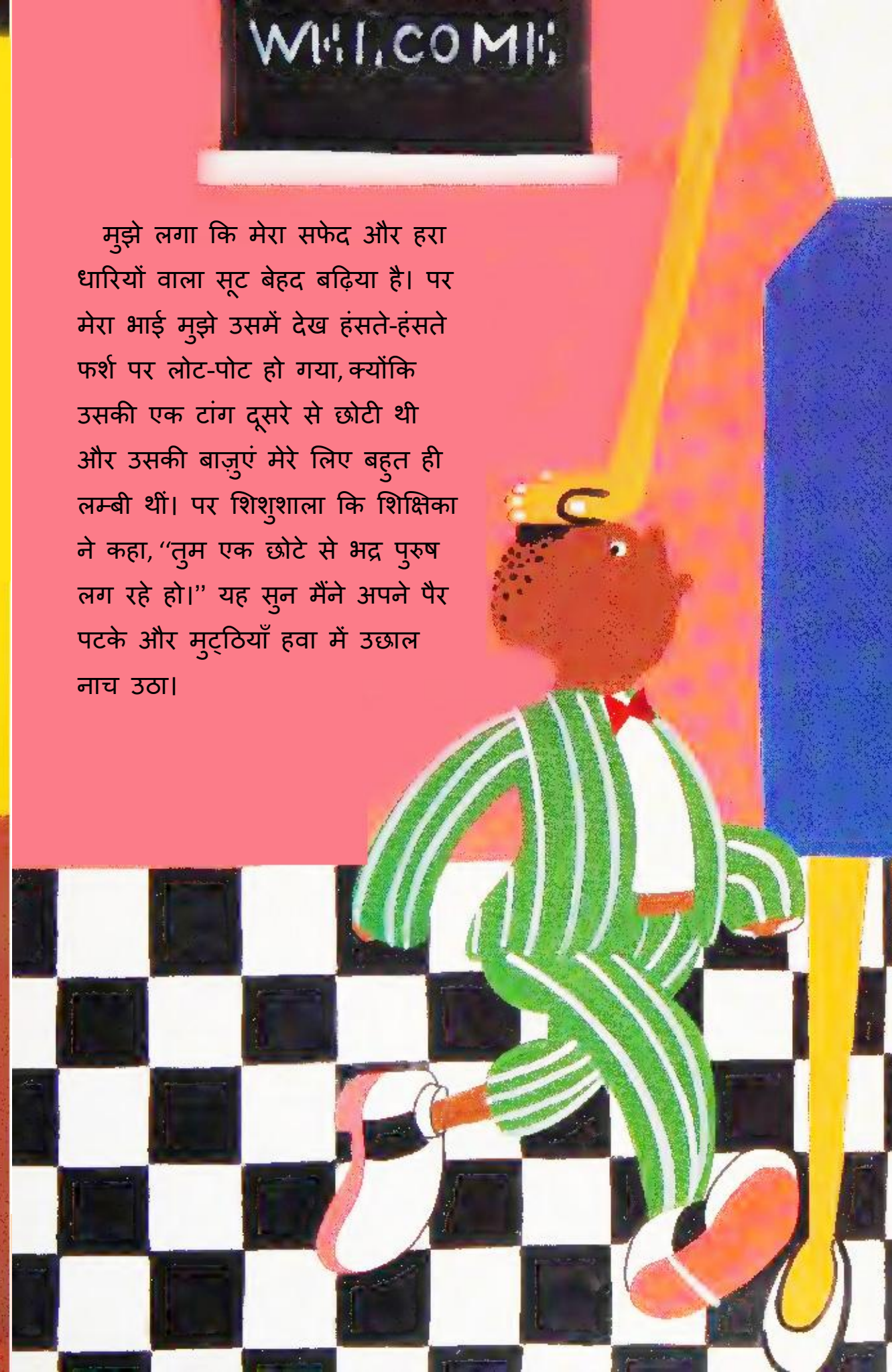
जब मैं क़रीब दस साल का हुआ, मैं और मेरा भाई शिकार करने वाले साथी बन गए। हमारी एक पड़ोसन थीं जो ऐसी चीज़ें इकट्ठा किया करती थीं जिन्हें वे "बेशकीमती" कहतीं और जिसे दूसरे "कबाड़" कहते थे।
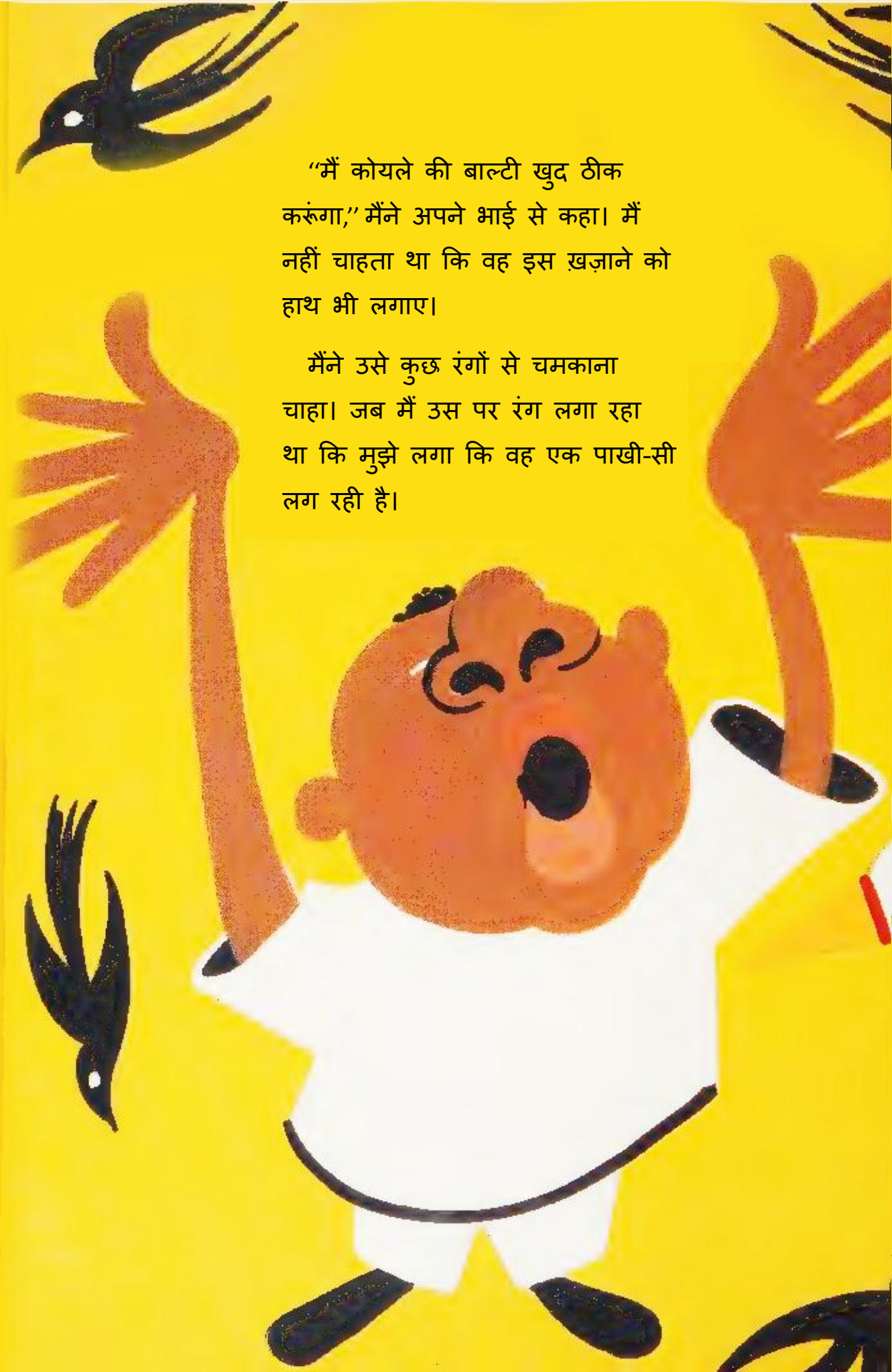
वे हमें अपने गराज में "अच्छी चीज़ों का शिकार करने देती थीं। हमें वहाँ एक धातु से बना औजारों का बक्सा मिला, जिस पर से एक गाड़ी गुज़र चुकी थी, एक फटा लैम्पशेड, एक मेज़ जिसका एक पाया गायब था। तब एक दिन मुझे वहाँ एक मुड़ी-तुड़ी कोयले की बाल्टी मिली।

कोयले की बाल्टी का एक सिरा चोंचदार होता है। लोग उसका इस्तेमाल पुराने ज़माने में अपनी भट्टी में कोयला डालने के लिए करते थे। वह बाल्टी सचमें बेहद सुन्दर थी, पर उदास लग रही थी, मानो कोई उसे चाहता ही न हो।
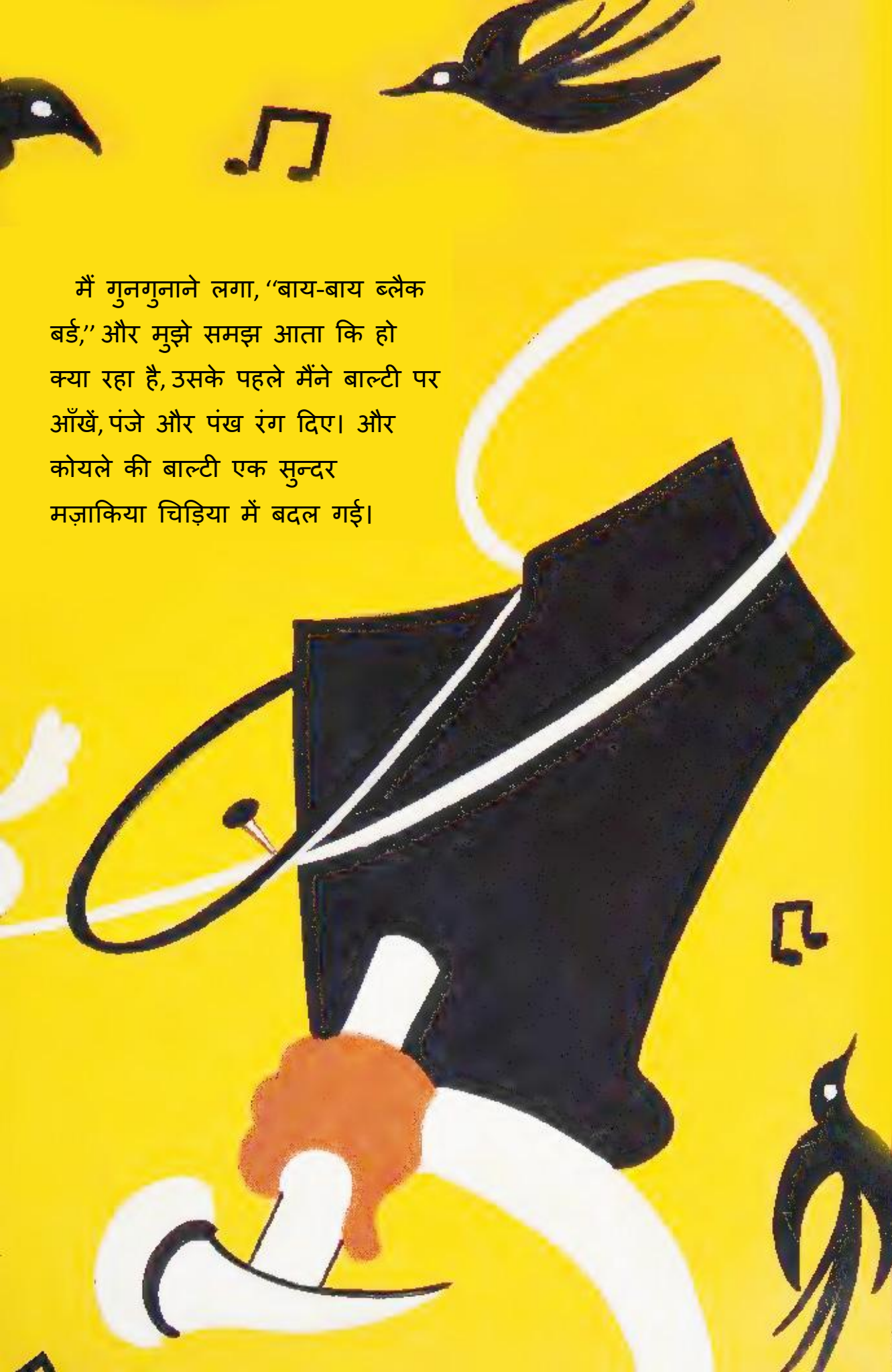
ज़्यादातर बार मेरा भाई मुझसे कुछ ऐसे कहता था, "मैं इसका यह हिस्सा ठीक कर दूंगा टॉम। तुम बस इस कुर्सी में कीलें ठोक दो।"

"मैं कोयले की बाल्टी खुद ठीक करूंगा," मैंने अपने भाई से कहा। मैं नहीं चाहता था कि वह इस ख़ज़ाने को हाथ भी लगाए।

मैंने उसे कुछ रंगों से चमकाना चाहा। जब मैं उस पर रंग लगा रहा था कि मुझे लगा कि वह एक पाखी-सी लग रही है।

मैं गुनगुनाने लगा, "बाय-बाय ब्लैक बर्ड," और मुझे समझ आता कि हो क्या रहा है, उसके पहले मैंने बाल्टी पर आँखें, पंजे और पंख रंग दिए। और कोयले की बाल्टी एक सुन्दर मज़ाकिया चिड़िया में बदल गई।
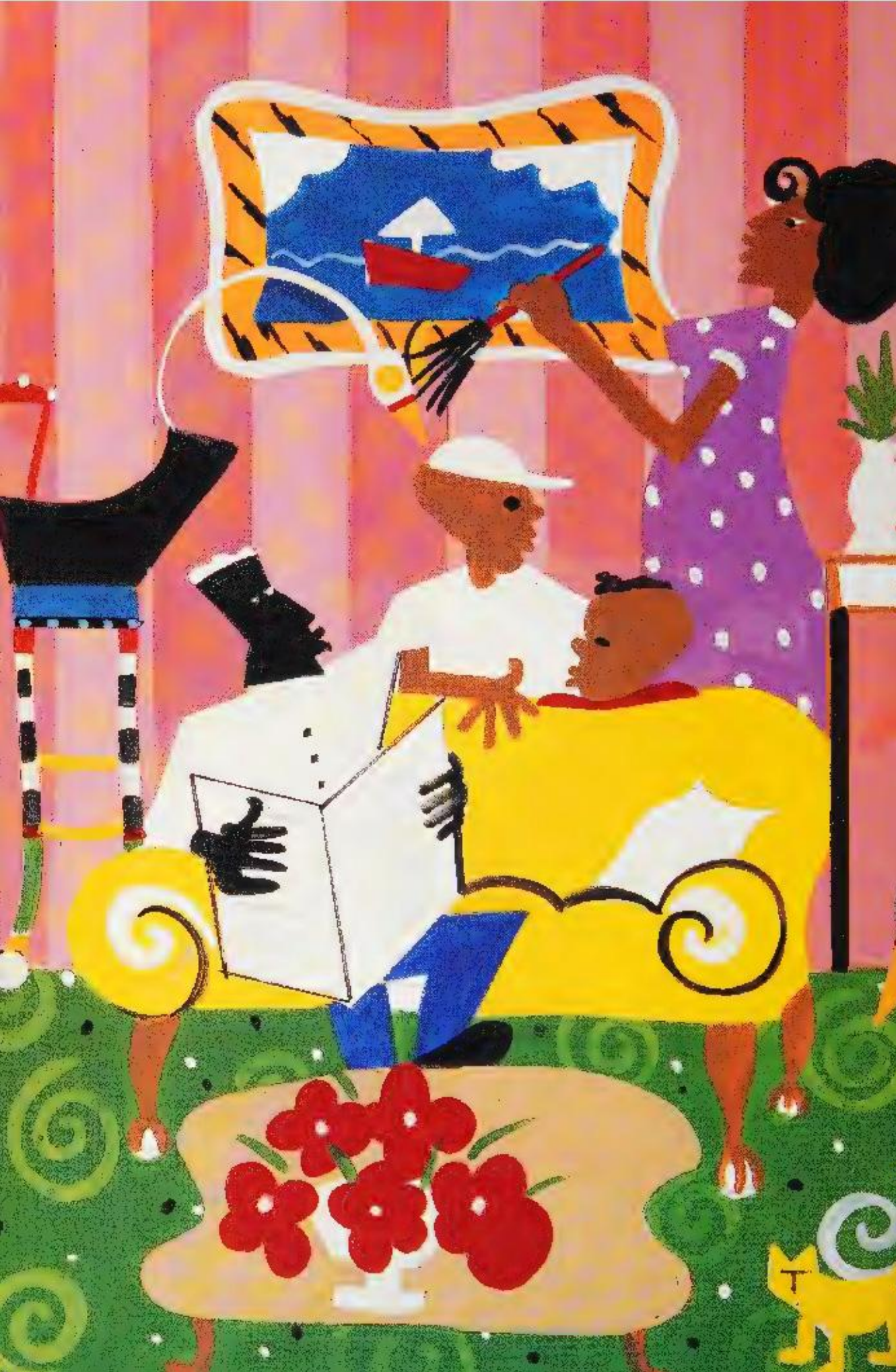
मैं उसे ले नीचे उतरा कि माँ को चौंका सकूं। पर मेरा भाई पहले ही चीखा, ''ओ माँ! ज़रा देखो तो। टॉम तो कलाकार है, यह तो बढ़िया है, सचमें अच्छा!''

मेरी माँ मुस्कुराई।

''अरे टॉम मैं तुम्हें इसके लिए पचास सेंट दूंगा,'' मेरे भाई ने कहा

''पिचहत्तर,'' मैंने कहा।

''ना, यह बहुत ज़्यादा है,'' मेरे भाई ने भौं चढ़ाते हुए कहा।

मैं उसे वैसे भी बेचना नहीं चाहता था। मैं सिर्फ़ उसे देखना चाहता था। मेरी माँ ने उसे बैठक में रख दिया ताकि सब उसे, हर दिन देख सकें।
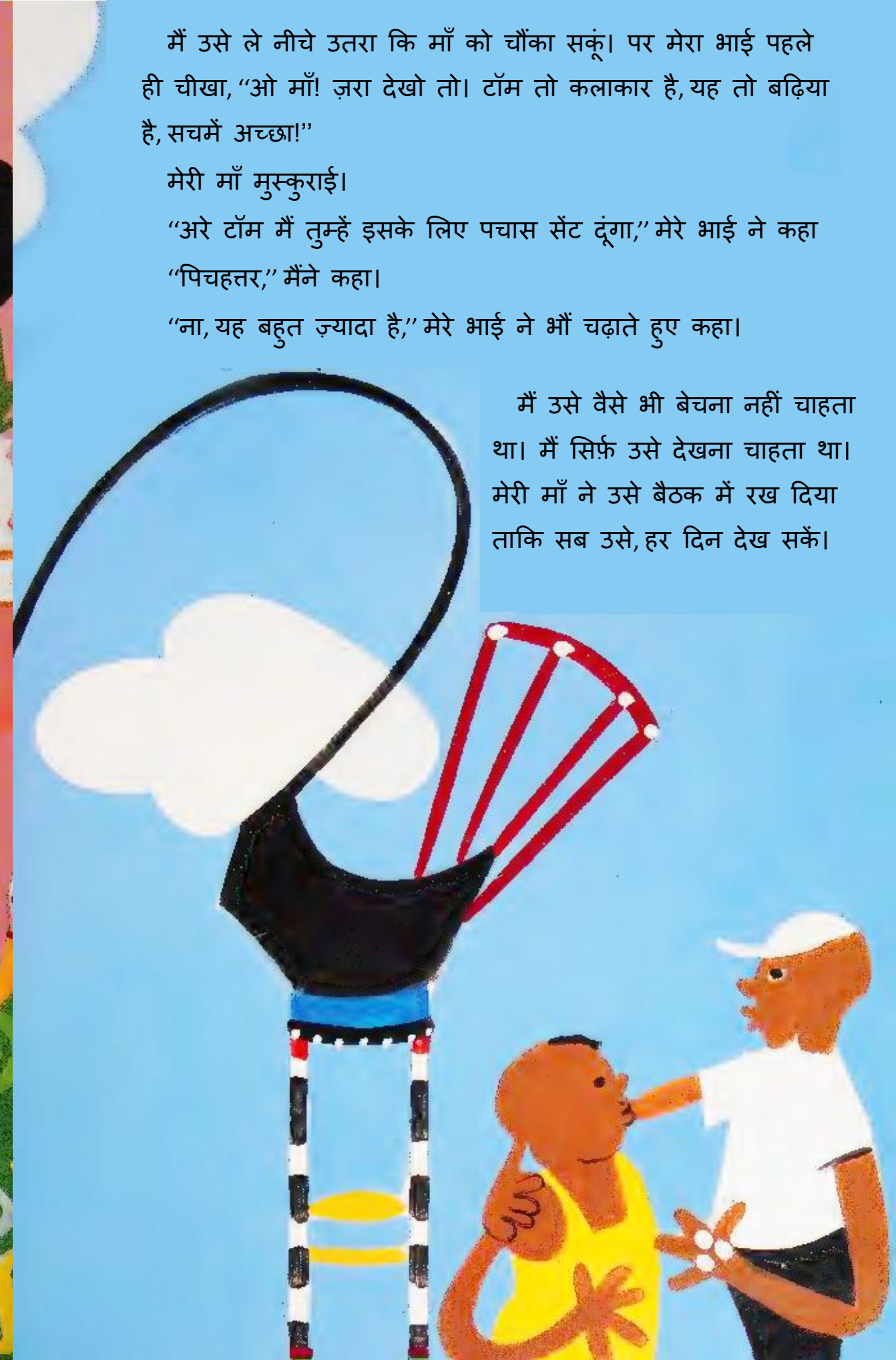
जब मैं हाई स्कूल में गया, मैं नाटकों के लिए दृश्य बनाता और बुलैटिन बोर्ड को सजाता। दोस्तों की रिपोर्टों के लिए चित्र भी बना देता।

हमारी कला कक्षाओं में बहुत सामग्री नहीं हुआ करती थी। पर हमारे शिक्षक हमें अपना काफी समय और ध्यान दिया करते थे।

एक दिन मेरे शिक्षक ने कहा, "टॉम तुम्हें मेरीलैण्ड इन्स्टिट्यूट ऑफ आर्ट के कॉलेज में जाना चाहिए। तुम रंग और डिज़ाइन में माहिर हो।

"वह तो ठीक है," मैंने कहा, "पर वह तो शहर के दूसरे हिस्से में है। मेरे घर से बहुत दूर।"

जब मैं पहली बार कला संस्थान गया, मुझे लगा कि मैं उस कोयले की बाल्टी-सा हूँ। काला, पिचका हुआ और ग़लत समय और जगह में हूँ।

बाकी विद्यार्थी ऐसे हल्के कोमल रंगों में चित्र बनाते, जो उनके चेहरे जैसे थे। इधर मैं अपने चित्रों में दबंग, चटक लाल, नीला और काला रंग इस्तेमाल किया करता, जैसा मेरा मुहल्ला था।

मुझे तब अचरज हुआ जब हमारे प्रोफेसर ने कहा कि चित्र बनाने के दोनों तरीके अच्छे हैं। हल्के, कोमल रंग भी अच्छे हैं, दबंग, चटक भी। "तुम्हें उन रंगों का इस्तेमाल करना चाहिए जो तुम देखते और महसूस करते हो। जो भी आँको उसमें तुम्हें अपनी कहानी कहनी चाहिए," प्रोफेसर ने कहा मैंने कोयले की बाल्टी के बारे में सोचा। मैंने उससे एक कहानी कही थी। मैंने एक ऐसी पुरानी चीज़ का इस्तेमाल किया था, जिससे कोई दूसरा एक नई कहानी नहीं कहना चाहता था।

कुछ समय बाद मैं कला संस्थान में सहज और अच्छा महसूस करने लगा। अनेक विभिन्न संस्कृतियों के लोगों से मेरी दोस्ती हुई। मेरे दोस्तों को पता था कि मैं कई कैनवास के टुकड़े टांग चित्रपट (स्क्रीन) बनाता था और ऐसी मूर्तियाँ बनाना पसन्द करता था जो मेरे चित्रों जैसी लगें।

बाद में जब मैं बॉल्टीमोर के स्कूलों में कला शिक्षक बना, मैं हमेशा अपनी छात्राओं और छात्रों को कहता कि आपके पास कुछ न भी हो तो भी आप कलाकृति बना सकते हैं। अगर कैंची न हो तो आप कागज़ को फाड़ सकते हैं। अगर आपको जो रंग चाहिए वह न हो, तो आप किसी पत्रिका में वह रंग तलाश कर उसे चिपका सकते हैं।

आप अपने नीले दिल, यानी उदासी को, लाल रंग से चित्र बना ढ़क नहीं सकते। अगर आप उदासी यानी नीला महसूस करें तो चित्र को नीले रंग से ही बनाएं। अगर आप लाल महसूस करें तो लाल से बनाएं। आपका रंग आपके अंतस की गहराई से आएगा। अपनी कूंची को रंग में डालें, उसके पहले सोचें, महसूस करें।

अगर आप अपने रंगों और खुद अपने प्रति ईमानदार हों, तो कुछ भी संभव है। मैं अपने स्टूडियो में दिन-रात चित्र बनाता हूँ। मैं अब भी कई फेंकी गई वस्तुओं में सुन्दर आकार पा लेता हूँ। मैं इन चीज़ों के टुकड़ों से कहानी कहता हूँ। मुझे अब भी चटक रंगों का इस्तेमाल करना पसन्द आता है। मैं ऐसे चित्र और मूर्तियाँ बनाता हूँ जो मेरे लोगों और संस्कृति के बारे में कुछ कहते हैं।

आज मेरी कुछ कृतियाँ अजायबघरों में और लोगों के घरों में हैं। मैंने बॉल्टीमोर शहर की एक दीवार पर एक बड़ा चित्र बनाया है। और लोग अब कहते हैं, "ओह! यह तो टॉम मिलर की रचना है।"

कई लोगों को मेरी कला पसन्द है। यह बात मुझे स्वस्थ रखती है, और काम करते जाने की प्रेरणा देती है। मुझे अब भी कोयले की बाल्टी जैसी चीज़ें तलाशना पसन्द है, जिन्हें मैं कलाकृति में बदल सकता हूँ और लोगों को खुश कर सकता हूँ।

याद रहे, उम्मीद, प्यार, कड़ी मेहनत, और ढ़ेर सारे रंग आपके पैरों को नचवा और आपकी मुट्ठियों से हवा में मुक्केबाज़ी करवा सकते हैं।

उम्मीद, प्यार, कड़ी मेहनत और रंग एक बेचारी-सी कोयले की बाल्टी को उड़ा सकते हैं।

टॉम मिलर अमरीका के राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध कलाकार हैं। उनकी कृतियाँ घरों, अजायबघरों और सार्वजनिक स्थानों की शोभा बढ़ाती हैं। उनका जन्म और लालन-पालन बॉल्टीमोर के सैन्डटाउन, विनचैस्टर इलाके में हुआ था। वे कार्वर टैक्निकल एण्ड वोकेशनल स्कूल में पढ़े। उन्हें मेरीलैण्ड इन्स्टिट्यूट के कॉलेज ऑफ आर्टस के लिए छात्रवृत्ति मिली। उन्होंने कई सालों तक बॉल्टीमोर के सरकारी स्कूलों में पढ़ाया। आज वे अपने दबंग, रंग-बिरंगे फर्नीचरों के लिए, तथा स्वयं द्वारा आविष्कृत शैली, जिसे वे "एफ्रो-डेको" कहते हैं, में बनी मूर्तियों, प्रिन्टों तथा चित्रों के लिए जाने जाते हैं। साथ ही अपनी कला में छिपे "चतुर हास्य" के लिए भी।

कैमी कैलोवे मर्फी जैज़ संगीतकार कैब कैलोवे की बेटी हैं तथा बॉल्टीमोर में कला व संस्कृति की सक्रियकर्मी हैं। वे वर्जिनिया में एक पुरस्कृत स्कूल में शालापूर्व बच्चों की शिक्षिका तथा प्रधानाध्यापिका रह चुकी हैं। वे कोपिन स्टेट कॉलेज की सांस्कृतिक विकास परामर्शदाता हैं, जहाँ वे संगीत व नृत्य कार्यक्रमों पर काम करती हैं। अन्य गतिविधियों के अलावा वे यूबी ब्लेक नैशनल जैज़ म्यूज़ियम एण्ड कल्चरल सेंटर की अध्यक्षा तथा कैब कैलोवे जैज़ इन्स्टिट्यूट की पर्यवेक्षक हैं।

1991 में **टॉम मिलर** ने यूबी ब्लेक म्यूज़ियम में आयोजित बिलि हॉलीडे की प्रदर्शनी के लिए एक कुर्सी बनाई थी। "मैंने उससे पूछा कि उसने कुर्सी पर घंटियाँ क्यों लटकाई हैं? उसका जवाब था, "वह जहाँ भी जाएगी वहाँ संगीत सुनाएगी।" कैमी मर्फी याद कर बताती हैं। "मैं सोचने लगी, कि कोई इन्सान इतना रचनात्मक कैसे बन सकता है। सो, हमने उसके बचपन और परिवार के उन लोगों के बारे में बात की जो चित्रकारी करते थे। पड़ोसियों के प्रोत्साहन और उसकी प्रतिभा को पहचाानने आदि के बारे में बात की। ठीक उसी पल '*कैन अ कोल स्कटल फ्लाई*' का विचार जन्मा।"

“आज मेरी कुछ कलाकृतियाँ अजयबघरों में और लोगों के घरों में हैं। मैंने बॉल्टीमोर शहर में एक बड़ा भित्ती चित्र बनाया है, और लोग अब कहते हैं, “ओह! यह तो टॉम मिलर की रचना है।”